13

झूठे शिक्षकों से सावधान
(2 पतरस 2:1–22)

अच्छा अनुग्रह गुज़ारने के लिए हम में से अधिकतर लोगों के लिए सबसे कठिन घटनाओं में से एक मूर्ख बनाए जाना है।

जब पतरस ने उन झूठे शिक्षकों का विवरण दिया जो प्रभु की मण्डलियों में फूट डाल रहे थे, तो उसने मसीही लोगों से कहा, ''तुम्हारे अधीन किए जाने का खतरा है।'' हो सकता है कि धोखा देने वाली शिक्षाएं पीढ़ी से पीढ़ी में अलग अलग हों। परन्तु धोखा वही रहता है। शिक्षकों के फल और जीवन शैली अधिक सही होते हैं। यह दिलचस्प होता यदि पतरस उनकी शिक्षा का ब्योरा देता, परन्तु हमारे लिए इस निर्देश का मिलना और लाभदायक है ताकि हम कथा कहानियों से निपटने के लिए तैयार हो सकें।

झूठे शिक्षक सत्य के मार्ग को बदनाम करते हैं (2:1-9)

सामना करना अच्छा नहीं लगता। हम में से अधिकतर लोग जहां तक हो सके इससे बचते हैं, परन्तु सामना करने से बचना कई बार कायरता जैसा ही होता है। कई बार भले पुरुषों और स्त्रियों के आराम से बैठकर जो बेहतर जानते हैं, स्वार्थी और अपनी सेवा करने वालों को कब्जा करने की अनुमति देकर खामोशी से बैठ जाने पर भयंकर बातें होती हैं। हम पढ़ते हैं, ''जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है, वह गंदले सोते और बिगड़े हुए कुण्ड के समान है'' (नीतिवचन 25:26)। यदि कलीसिया को परमेश्वर को सम्मान देना है और अपनी शिक्षाओं को शुद्ध रखना है, तो भले और ज्ञान-वान लोगों को बोलने का साहस करना पड़ेगा। झूठे शिक्षकों ने उन कुछ लोगों को अपने अधीन कर लिया था, जिन्हें पतरस ने सम्बोधित किया था, परन्तु अन्य केवल निष्क्रिय थे। पतरस चाहता था कि विश्वासी लोग सच्चाई की पैरवी के लिए आगे आएं।

उनकी उम्मीद रखी जाए

पुराने और नये नियमों की चेतावनियों के बावजूद अक्सर लोग कलीसिया से युद्ध के मैदान के बजाय फूलों की सेज होने की अधिक उम्मीद करते हैं। पुराने नियम में कई झूठे नबी थे (2:1)। यिर्मयाह उनके कई झूठे शिक्षकों के विरुद्ध खड़ा हुआ जो यरूशलेम को आश्वासन देते थे कि सब कुछ ठीक होगा, यानी परमेश्वर अपने मन्दिर को गिरने नहीं देगा और दाऊद का पुत्र हमेशा अपने लोगों पर शासन करेगा। यिर्मयाह पर न केवल गुमनाम संदेश बताने का बोझ था बल्कि उसे उन लोगों का बार बार मज़ाक भी सहना पड़ता था जो दावा करते थे कि उन्हें, भी, परमेश्वर की ओर से संदेश मिला है।

जैसे उस समय झूठे शिक्षक थे वैसे ही पतरस ने अपने पाठकों को यकीन दिलाया कि

कलीसिया में से झूठे शिक्षक उठ खड़े होंगे (2:1)। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के ऐल्डरों को ऐसी ही चेतावनी दी: ''मैं जानता हूं, किमेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे'' (प्रेरितों 20:29, 30)। चेतावनियों के बावजूद मसीही लोग अक्सर झूठे शिक्षकों द्वारा कलीसिया की शांति भंग किए जाने पर बहुत हैरान होते हैं। विवाद के बीच में कुछ मसीही लोग निराश हो गए हैं और अनुग्रह से गिर गए हैं (2:2)।

यदि हम पतरस की बात सुनें तो हमें यह निष्कर्ष निकालना पड़ेगा मसीही लोगों के लिए इतने ज्ञानवान होना आवश्यक है कि उन्हें धार्मिक गलती का सामना करने के योग्य होने के लिए मसीह की शिक्षाओं का पता हो। झूठे शिक्षक विनाश करने वाली कथा कहानियां चुपके से ले आते हैं। वे और जो उनसे धोखा खाते हैं, सत्य के मार्ग की बदनामी का कारण बनते हैं।

परमेश्वर उनका न्याय करेगा

मसीही लोग झूठे शिक्षकों के पीछे चलें या न या उनका सामना करें और उनकी गलतियों को सामने लाएं, अन्ततः परमेश्वर उनका न्याय अवश्य करेगा। पतरस ने तर्क दिया कि परमेश्वर ने हमेशा उन लोगों का न्याय किया है जिन्होंने उसके विरुद्ध विद्रोह किया है। और उनका भी वही हाल होगा जो विद्रोह करने वालों का हुआ था। प्रेरित ने ''जिस प्रकार'' तर्क का इस्तेमाल किया जिसका खण्डन करना कठिन है। जिन उदाहरणों का चयन उसने समझाने के लिए किया वे विशेषकर दिलचस्प हैं।

पतरस ने कहा कि परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को भी नहीं छोड़ा जिन्होंने पाप किया था। बल्कि उन्हें नरक में भेज दिया (2:4)। मसीही लोगों में एक दन्त कथा है कि शैतान परमेश्वर का एक स्वर्गदूत था जिसे परमेश्वर का विद्रोह करने पर मनुष्यजाति को लुभाने वाला और विरोध के रूप में पृथ्वी पर घूमने के लिए परमेश्वर के सामने से फैंक दिया गया था। 2:4 में शैतान को ढूंढ़ने के लिए काफ़ी कल्पना की आवश्यकता है। इस आयत में जितना दिया गया है उससे अधिक स्वर्गदूतों के बारे में हम कुछ नहीं जानते। हम शैतान के आरम्भ के बारे में कुछ नहीं जानते और उसके इतिहास का हमें बहुत कम पता है। हमारे लिए और जानने की इच्छा करना स्वभाविक है। परन्तु हमें उसी पर संतोष करना आवश्यक है जो परमेश्वर ने प्रकट करना चुना है।

शैतान का विषय आने पर बाइबल के कुछ वचनों पर लगातार चर्चा होती है। उनमें से एक यशायाह 14:12 है, जिसे KJV में इब्रानी भाषा के शब्द ''भोर का तारा'' का अनुवाद लातीनी शब्द ''लुसीफर'' से किया गया है, जिसका अर्थ एक ही है। संदर्भ में नबी बाबुल के राजा की ऊंची शान में अन्तर कर रहा था जिसे सांकेतिक रूप में ''भोर का तारा'' कहा गया, जो उसे मिलने वाला अति निन्दनीय नाम था। इस वचन में शैतान की कोई बात नहीं है।

लूका 10:18 में यीशु ने कहा कि उसने शैतान को स्वर्ग से बिजली की तरह गिरते देखा है। यहां शैतान का उल्लेख है, परन्तु संदर्भ के समीक्षा करने पर पता चलेगा कि उसे यीशु द्वारा लिमिटिड कमीशन पर भेजे गए सत्तर (या बहत्तर) चेलों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ के द्वारा सांकेतिक अर्थ में नीचे लाए जाने की बात कहीं गई है। यह वचन शैतान के स्वर्ग से गिराए गए स्वर्गदूत की बात बिल्कुल नहीं करता।

प्रकाशितवाक्य 12 एक और हवाला है जिसे शैतान के आरम्भ के लिए बताया जाता है। अत्यन्त प्रतिकात्मक पुस्तक के एक अध्ययन प्रतिकात्मक भाग में शैतान के परमेश्वर के साथ युद्ध करने और उसके पृथ्वी पर फैंके जाने की बात कही गई है। नि:संदेह इसी संदर्भ में सूरज को पहने एक स्त्री एक बेटा जनती है जो स्पष्टतया मसीह है। इस वचन का अर्थ अक्षरश: लेने की ज़िद करने वाले बेशक यह जानने में दिलचस्पी नहीं लेंगे कि कोई स्त्री सूरज को कैसे ओढ़ सकती है। दोहराने के लिए बाइबल शैतान के आरम्भ के बारे में कुछ नहीं बताती और न ही 2:4 में इसका कोई संकेत है।

जब पतरस ने कहा कि स्वर्गदूतों को नरक में डाला गया था, तो उसने उस शब्द का इस्तेमाल किया जो बाइबल में केवल यहीं पर आया है। यह अधोलोक के संसार के नीचले क्षेत्र को दर्शाता यूनानी मिथ्या के शब्द ''टारटरस'' का क्रिया रूप है। कई छात्र यह सुझाव देना चाहते हैं कि पतरस ''टारटरस'' शब्द का इस्तेमाल करके अधोलोक के किसी विशेष क्षेत्र की बात कर रहा था। इसे नकारा नहीं जा सकता। परन्तु संयोग से आए इस शब्द को लेकर उससे अधोलोक का नक्शा तैयार करना केवल अनुमान है। अनुमान लगाना तब तक कोई हानि नहीं पहुंचाता जब तक हम इस पर मसीही डॉक्ट्रीन बनाने का प्रयास नहीं करते, या जब तक हम अनुमान लगाते हुए इस पर बाइबल की शिक्षा को नज़रअन्दाज़ नहीं करते। पतरस ने कहा कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को नहीं छोड़ा। जिस बात को ध्यान देना आवश्यक है वह यह है कि वह झूठे शिक्षकों को भी नहीं छोड़ेगा।

परमेश्वर के स्वर्गदूतों को न्याय के लिए देने के पतरस के उदाहरण से उसके आरम्भिक पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे, चाहे यह हम से नहीं कहा गया है। बेशक उसका अगला उदाहरण आज भी उतना ही प्रसिद्ध है जितना उसके आरम्भिक पाठकों में था। प्रेरित ने ध्यान दिलाया कि परमेश्वर ने नूह के समय जल प्रलय के पहले के संसार को नहीं छोड़ा (2:5)। KJV में यहां कुछ व्याख्या की आवश्यकता है। इसमें कहा गया है कि परमेश्वर ने ''आठवें व्यक्ति नूह को बचाया।'' नूह आठवां व्यक्ति किस अर्थ में था? इसका अर्थ आठवीं पीढ़ी नहीं हो सकता, क्योंकि नूह आदम से दसवीं पीढ़ी था। 1 पतरस 3:20 में इसका हल मिलता है। जहां कहा गया है कि प्रलय आने पर आठ लोग बचाए गए थे। 2:5 का अर्थ है कि नूह और सात अन्य लोग, यानी कुल आठ जन बचाए गए थे।

पतरस का तीसरा उदाहरण अब्राहम के समय से लिया गया। परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के प्राचीन नगरों पर अपना न्याय किया, बिल्कुल वैसे ही जैसे स्वर्गदूतों और जल जप्रलय के पहले के संसार का किया था (2:6-8)। परमेश्वर ने लूत को वैसे ही निकाल लिया जैसे उसने नूह को निकाला था। प्रभु को मालूम था कि धर्मी को कैसे निकालना है और दोषी को दण्ड के लिए कैसे बुलाना है (2:9)। उसने हमेशा ऐसा ही किया, और वह झूठे शिक्षकों के साथ फिर से बिल्कुल वैसा करेगा जो एशिया माइनर की कलीसियाओं में गड़बड़ कर रहे थे।

झूठे शिक्षक निर्भय और मनमानी करने वाले हैं (2:10-16)

कई बार गम्भीर मसीही को बाइबल और इसकी शिक्षा पर संदेह होता है और अपने प्रश्न पूछने की प्रक्रिया में वह बाइबल की शिक्षा के विपरीत विचार व्यक्त करता है। ऐसे मामले में

एक परिपक्व मसीही को ज्ञान के आरम्भिक बिन्दु के रूप में बाइबल का इस्तेमाल करते हुए उसे कोमलता और दृढ़ता से समझाना आवश्यक है। यह युवा, अनुभवहीन या सच्चाई के गम्भीर खोजी नहीं थे जो पतरस की जानकारी वाली कलीसियाओं में विनाशकारी शिक्षाएं ला रहे थे। उनके साथ निर्णयक ढंग से निपटा जाना आवश्यक था।

वे ढीठ थे

अधिकतर लोगों के लिए विकास करने का मार्ग गम्भीर, विचारशील प्रश्न पूछना रहा है। समस्याएं तब आती हैं जब हम पहले से सोचे समझे प्रश्न पूछते या जब हमारे दिलचस्पी सावधानीपूर्वक तर्क या ठोस प्रमाण के बजाय अपने दृष्टिकोण के बचाव में होती है। इस सोच में फिसलना आसान है। मेरी मेज़ पर एक हंसाने वाला चिह्न लगा है जिसके साथ लिखा है, ''जिस लोगों को लगता है कि उन्हें सब कुछ पता है वे हमारे लिए जिन्हें पता है बहुत चिढ़ाने वाले होते हैं।'' आम तौर पर निर्भय और मनमानी करने वालों के लिए अपने आपको पहचानना कठिन होता है।

पतरस ने कहा, की झूठे शिक्षकों का एक संकेत सम्मान की उनकी ढिठाई से कमी होती है: ''... वे ऊंचे पद वालों को भला बुरा कहने से नहीं डरते'' (2:10)। NIV में ''वे स्वर्गीय जीवों का अपमान करने से नहीं डरते,'' जबकि KJV में, ''वे ऊंचे पद वालों की बुराई करने से नहीं डरते'' है। यह हवाला स्वर्गीय जीवों या मानवीय उच्च अधिकारियों में से किसी के लिए भी हो, झूठे शिक्षकों में अपने से बड़े, अधिकारी, सामर्थ या ज्ञान के लिए कोई सम्मान नहीं है (2:11)। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे उन मामलों में जिन्हें वे समझते ही नहीं हैं निंदा या अपमान करेंगे (2:12)। अर्थ यह है कि वे किसी का भी जिसकी शिक्षा, अनुभव, या भक्ति से उन्हें समझाया जा सके अनादर दिखाते हैं। वे उन बातों में जिनमें स्वर्गदूत भी मुंह नहीं खोलेंगे, घूमाने वाले विचार या फैंकने वाले आरोप लगाते हैं।

वे भोगी हैं

पतरस ने पाठकों से उन लोगों के व्यक्तिगत जीवनों को देखने का आग्रह किया जो उन्हें सिखाते हैं। जिन शिक्षकों की उसने बात की वे अत्याधिक निर्लज अर्थात दिन दिहाड़े दिखावा करने वाले व्यवहार करने वाले थे जो संसारिक सोच वाले व्यक्ति भी रात के लिए छोड़ देते थे। पतरस ने कहा कि वे पवित्र लोगों की सभाओं पर कलंक और दोष हैं (2:12-14)।

पतरस की बात की झूठे शिक्षक ''सीधे मार्ग से भटक गए'' थे का अर्थ यह नहीं था कि वे किसी समय विश्वासयोग्य थे (2:15)। उनके जीवन सीधे मार्ग को त्यागने के पक्के नमूने थे। झूठे शिक्षक आम तौर पर चंचल लोगों का साथ ढूंढ़ लेते हैं जिनका वे व्यक्गित लाभ के लिए शोषण कर सकें। इस सम्बन्ध में वे अपने आत्मिक पूर्वज बिलाम के मार्ग पर चलते हैं जो अपनी भक्ति भाड़े पर देने वाला नबी था (2:15, 16)।

झूठे शिक्षक विनाश के दास हैं (2:17-22)

अध्याय 2 में झूठे शिक्षकों का विवरण यहूदा के पत्र के विवरणों से मेल खाता है। उदाहरण

के लिए यहूदा के बिन पानी के कुओं और पतरस के बिन पानी के बादलों में थोड़ा अन्तर दिखाई देता है। पूर्व के निकट मौसम आम तौर पर गर्म और खुशक होता है। भूमध्य के ऊपर से बादल उठने या मरुस्थल में मरूद्वीप से ताज़गी का अहसास होता है। इन लोगों की शिक्षा से प्राण के लिए कोई ताज़गी नहीं थी (2:17)। इस विवरण को प्रकाशितवाक्य के अन्तिम शब्दों से तुलना करना दिलचस्प है: ''जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंह ले'' (प्रकाशितवाक्य 22:17)।

स्पष्टतया झूठे शिक्षकों में कुछ ज़बर्दस्त वक्ता भी थे जिनका पतरस ने सामना किया था (2:18) इसके अलावा कुछ अपरिपक्व और कमज़ोर थे जिन्हें हाल ही में संसार की गंदगी में से बचाया गया था। शरीर के चतुराई भरे आकर्षण और स्वतन्त्रता तथा आज़ादी के वायदों के साथ झूठे शिक्षक काफ़ी लोगों को अपने पीछे लगाने में सफल रहे (2:19)। उनके प्राणों की खातिर मसीही लोगों के लिए उत्तेजित और मनोरंजन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाली शिक्षा तथा साधनों, लपेटनों और झालरों में ध्यानपूर्वक अन्तर करना आवश्यक है।

पतरस के पाठकों को मसीह से दूर ले जाने वाले शिक्षकों का पसन्दीदा शब्द स्वन्त्रता था। लोगों द्वारा अपने ऊपर स्वतन्त्रता के नाम पर लाई जाने वाली दासता और विपत्ति जीवन के बड़े विरोधाभासों में से एक है। किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक बार प्रभु द्वारा बताया जाने वाला सच यह है कि व्यक्ति को जीवन केवल स्मर्पण से मिलेगा। ''गेहूं का दाना'' उगने से पहले मारना आवश्यक है (यूहन्ना 12:24)। शब्दावली में थोड़े बहुत अन्तरों के बावजूद मत्ती 10:39; 16:25; मरकुस 8:35; लूका 9:24; 14:26; 17:33; और यूहन्ना 12:25 में विचारों का सार एक ही है।

कुछ स्वतन्त्रताएं अपने स्वभाव से ही अन्य स्वतन्त्रताओं को बाहर निकाल देती हैं। खुशहाल परिवार पाने की स्वतन्त्रता विवाहोत्तर सम्बन्धों की किसी भी स्वतन्त्रता को निकाल देती है। ईमानदार पुरुष या स्त्री के लिए आत्मसम्मान की स्वतन्त्रता झूठ बोलने, चोरी करने और छल करने की स्वतन्त्रता को निकाल देती है। हर व्यक्ति के लिए उसी स्वतन्त्रता को चुनना आवश्यक है जो उसके लिए अधिक महत्वपूर्ण है। पतरस ने कहा कि एशिया माइनर की कलीसियाओं में झूठे शिक्षक जो स्वतन्त्रता का वायदा करते थे वास्तव में स्वयं गुलाम थे। फिर उसने तीखी बात कही, ''... क्योंकि जो व्यक्ति जिस से हार गया है, वह उसका दास बन जाता है'' (2:19)। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोग, जिन्होंने नया नियम लिखा, मसीही स्वतन्त्रता को आत्मा तृप्त होने के रूप में नहीं देखते थे। याकूब ने सुसमाचार को ''स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था'' कहा (याकूब 1:25; 2:12)। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया'' (रोमियों 8:2)।

झूठे शिक्षकों की बड़ी त्रासदी यह थी कि नये परिवर्तितों को अपने पीछे लगाने का लालच देकर वे उन्हें प्रभावशाली ढंग से सदा के लिए परमेश्वर के राज्य से निकालने पर मोहर कर देते थे। पतरस ने कहा, ''क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिए इससे भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है'' (2:21)। मसीह में हाल ही में आए नये व्यक्ति के लिए उन लोगों के झगड़े में खीचे जाना जो प्रभु के नाम का दावा करते हैं शायद उसके साथ हो सकने वाली सबसे विनाशकारी बात

होगी। हाल ही में परिवर्तित हुए नये नये आदमी की स्थिति को दर्शाने के लिए जो निराशा के साथ संसार में वापस लौट जाता है, पतरस ने सुलेमान के एक नीतिवचन में से लिया (नीतिवचन 26:11) और दूसरा अपने समकालीन संसार में से। उसने कहा कि मसीह को जान लेने के बाद संसार की ओर वापस चला जाने वाला व्यक्ति उस कुत्ते की तरह है जो अपनी छांट की ओर जाता है या उस सूअरनी की तरह है जो कीचड़ में जाती है (2:22)।

सारांश

अपने पहले पत्र में पतरस का उद्देश्य बाहर की शक्तियों से दुख पाने वाले मसीही लोगों को मज़बूत करना और बनाना था। 2 पतरस में सामना किए जाने वाली समस्याओं की तुलना में, यह काफ़ी आनन्द भरा कार्य था। कलीसिया को हमेशा से बाहर वालों से सताव का सामना करना पड़ा है; इससे अपने अन्दर से उठने वाली विनाशकारी शक्तियों का भी सामना करना पड़ा है। यदि मसीह की कलीसिया को प्रभु के लिए संसार को प्रभाव में लेना है, तो मसीही लोगों के लिए भीतर से उठने वाली समस्याओं का समाना करने का साहस होना आवश्यक है।